हार्दिक बधाईयाँ

राष्ट्रीय अधिवेशन में नारी गौरव उपाधि से सम्मानित हुई विजया दीदी

मुनि पुंगव श्री 108 सुधासागर महाराज संघ के सानिध्य में किशनगढ़ में आयोजित दिगम्बर जैन महिला महासमिति के 24 वें राष्ट्रीय महिला अधिवेशन में बर्धमान महिला संभाग ललितपुर की अध्यक्षा विजया जैन "दीदी" को नारी गौरव उपाधि से सम्मानित किया गया। यह पुरस्कार राष्ट्रीय स्तर पर नारी सम्मान को बढ़ाने में श्रेष्ठ योगदान देने के आधार पर ही महासमिति के सदस्याओं द्वारा चयनित प्रत्याशी को दिया जाता है। गीतकार संगीतकार स्व. रवीन्द्र जैन के भ्राता एवं महासमिति के राष्ट्रीय अध्यक्ष मणीन्द्र जैन दिल्ली ने विजया दीदी को सम्मान पत्र भेंट करते हुए उन्होने भारतीय संस्कृति के प्रचार - प्रसार में अनवरत रूप से कहानी लेखन, रेडियो प्रसारण तथा अपने बहुआयामी व्यक्तित्व द्वारा सबको प्रोत्साहित करने एवं अपनी सक्रियता और उत्साह से जनमानस को प्रेरित करने रहने की प्रशंसा की। विजया जैन द्वारा नारी समस्याओं को लेकर लिखी कहानियों के दो संग्रह 'अपने हिस्से की धूप' व 'संकल्प' प्रकाशित हो चुके हैं। नारी सम्मान के प्रति समाज को जागरूक करने को लेकर प्रयत्न सराहनीय है। कहानी संग्रह के समर्पण में उन्होंने लिखा है कि 'उन सब को समर्पित, जो महिलाओं का उनके अधिकार और सम्मान दिलाने के लिए संघर्षरत है।' राष्ट्रीय महिला प्रकोष्ठा शीला डोड्या जयपुर के संयोजन में आयोजित किशनगढ़ महिला अधिवेशन में देश के विभिन्न अंचलो से चार हजार से भी ज्यादा सदस्यों ने प्रतिभाग किया। सदस्यों ने सांस्कृतिक कार्यक्रम और शोभायात्रा आदि कार्यक्रमों में भी उपस्थिति दर्ज कराई। ललितपुर से सरोज सिमरा, कल्पना समैया, मीना कबाडी, अनीता मोदी, सरिता जैन, सुनीता बरया, किरण सतभैया, मौसमी अलवा, मधु खजुरिया आदि 50 से अधिक समिति के पदाधिकारियों व सदस्यों ने सक्रिय योगदान दिया।

परम पूज्य राष्ट्रसन्त गणाचार्य विराग सागर जी महाराज के राष्ट्रीय रजत आचार्य पदारोहण महोत्सव पर आयोजित यति सम्मेलन युग प्रतिक्रमण महा-महोत्सव के अवसर पर आयोजित।

राष्ट्रीय प्रतिभा सम्मान समारोह में कु. सुरभि जैन पिता शांतिकुमार जैन, गंजबासौदा को उनकी शैक्षणिक योग्यता एम.टेक में 86% अंक प्राप्त करने पर गणाचार्य विराग सागर के सानिध्य में अवार्ड व शाल, श्रीफल से सम्मानित किया गया।

पुलक जन चेतना मंच मुख्य शाखा झांसी के परम संरक्षक श्री राजू जैन सिरसावालों का भामाशाह अवार्ड से सम्मानित किया गया। आपने यति सम्मेलन में पूर्ण मनोयोग से योगदान देकर आयोजन को सफल बनाने में सार्थक प्रयास किये। आप बुंदेलखंड में हो रहे समस्त धार्मिक आयोजनों में अपनी सक्रिय भूमिका निभाते हुए जैन धर्म की प्रभावना को बढ़ाने का सतत् प्रयास कर रहे है।

भिण्ड में आर्यिका जैनेश्वरी दीक्षा का महोत्सव संपन्न।

आर्यिका गणिनी विभाश्री माताजी के ससंघ सानिध्य में आर्यिका दीक्षा महोत्सव के अवसर पर प्रात:काल 24 तीर्थंकर भगवान एवं बा. ब्र. बहिनों की शोभायात्रा मुख्य मार्गों से होते हुए कार्यक्रम स्थल पर पहुंची। श्रेष्ठीजन हाथी व रथ पर धर्म ध्वजा लिये हुये चल रहे थे। प्रज्ञसंघ एवं पार्श्वनाथ युवा मंडल एवं महिला मंडल, चन्द्रप्रभु महिला मंडल, अहिंसा ग्रुप आदि सामाजिक संगठन के कार्यकर्ताओं के साथ में चलते हुए समाजजन कीर्ति स्तंभ परिसर पहुँचे। जिसमें श्रद्धालुओं द्वारा जगह जगह स्वागत में भगवान की आरती की तथा भक्ति नृत्य किया।

मोक्ष मार्ग तलवार की धार पर चलने के बराबर है - विभाश्री माताजी

कीर्तिस्तंभ परिसर में आर्यिका गणिनी विभाश्री माताजी के संघस्थ बहिनों की जैनेश्वरी दीक्षा 30 सितम्बर को दोपहर 12 बजे से प्रारंभ हुई। खचाखच भरे पांडाल में आर्यिका गणिनी विभाश्री माताजी ने प्रवचनों में कहा कि मोक्ष मार्ग तलवार की धार पर चलने के बराबर है दीक्षार्थियों ने दीक्षा के लिए प्रार्थना की। इस भव से दीक्षा के भाव होना कठिन है किसी संत के माध्यम से संत बन भी जाये तो निभाना कठिन है, जिस प्रकार से दोस्ती करना आसान है लेकिन निभाना कठिन है।

माताजी ने कहा कि एक परिवार की चार बहिनें इस मोक्ष मार्ग पर आई है। देवेन्द्र नगर की जब ये बहिनें घर से निकली तो दूसरे भाई बहिनों ने इन्हें रोका लेकिन वैराग्य सच्चा होता है तो उन्हें कोई रोक नहीं पाता है। करीब दो वर्षों से निरंतर इस मार्ग पर आने के लिये वे निवेदन करती आ रही थी और आज वह दिन आया कि उन्हें जैनेश्वरी दीक्षा प्रदान की जा रही है। जिनके भाव बिगड़ते है उनका भव बिगड़ जाता है। समता साधु का आभूषण है 28 मूलगुणों की साधना, जो बहुत कठिन है। कीर्ति स्तंभ परिसर में आर्यिका गणिनी विभाश्री माताजी ने संघस्थ सात बहिनों को जैनेश्वरी दीक्षा में प्रात: काल केशलोच किया गया एवं दीक्षा के समय चौक पूरकर उस पर बहिनों को बिठाकर माताजी ने संस्कार करते हुए उनके परिवारजन एवं श्रद्धालुओं से पिच्छी कमंडल भेंट कराये तथा साथ ही माताजी ने नामकरण संस्कार भी किया। भिण्ड नगर में कई वर्षों बाद जैनेश्वरी दीक्षा का आयोजन बड़े धूमधाम के साथ आयोजित किया गया।

इसके पूर्व अनेक नगरों में बनौली कार्यक्रम धूमधाम पूर्वक मनाया गया। देवेन्द्र नगर की 6 बहनों ने एक साथ दीक्षा ग्रहण करने का संकल्प लेकर धर्म के प्रति आस्था का जो इतिहास रच दिया है वह वहाँ के जैन मानस को आजीवन याद रहेगा। 30 सितम्बर को आयोजित भिंड में होने वाली दीक्षा समारोह में सातों बहनें दीक्षा ग्रहण कर आर्यिका बनी। दीक्षा लेने वाली 6 बहनों में राजुल दीदी, प्रीति दीदी व रोशनी दीदी, नेहा दीदी आपस में सगी बहनें हैं। इनके साथ शिखा दीदी, प्रियंका दीदी, भी नगर की शान है। सुशीला दीदी, झांसी की दीक्षार्थी हैं। इन्होंने स्नातक और उसके बाद स्नातकोत्तर की पढ़ाई पूरी की है और अपना जीवन जनकल्याण के लिए समाज को समर्पित करने का संकल्प लिया है। एक ही कस्बे में जन्मी, पली-बढ़ी और शिक्षित हुई 6 बहनों को विदाई देते वक्त सबकी आंखें नम हो आई। झांसी नगर में दीक्षार्थी बहनों का बिनौला कार्यक्रम आचार्य विद्यासागर सभागृह में मुनिश्री 108 प्रेक्षासागरजी महाराज के सानिध्य में संपन्न हुआ। महाराजजी ने बहनों को संबोधित करते हुए कहा कि संसार में मनुष्य जीवन प्राप्त करना दुर्लभ है। स्त्री पर्याय को प्राप्त कर उसके सर्वोच्च शिखर पर पहुँचना जिन दीक्षा से ही संभव है। जिसे यह बहनें हासिल कर स्वयं पर कल्याण करेंगी। सुशीला दीदी नगर के करगुंवा तीर्थ क्षेत्र के निकट निवास करने वाले अशोक जैन की धर्मपत्नी व बाहुबली जैन की माँ है। 63 वर्ष की आयु में सभी सांसारिक रिश्तों को त्याग कर वैराग्य मार्ग में प्रवेश करने हेतु अंतिम विदाई ली।

इस अवसर पर अनेक वक्ताओं ने अपने विचार रखे। दीक्षार्थियों के वैराग्य पथ पर बढ़ने की प्रशंसा की। उपस्थित जन समूह ने दीक्षार्थी बहनों की गोद भराई की और अंतिम लौकिक श्रृंगार किया। बहनों ने सभी को सन्मार्ग पर बढ़ने का आशीर्वाद दिया। झाँसी में संपन्न बिनौली कार्यक्रम का संचालन पंचायत महामंत्री प्रवीण जैन ने व आभार करगुंवा क्षेत्र के मंत्री सुभाष जैन ने व्यक्त किया। भिण्ड में आयोजित कार्यक्रम में सकल दिगम्बर जैन समाज के सभी सदस्यों ने पूर्ण मनोयोग से कार्यक्रम को सफल बनाने में अमूल्य योगदान दिया। इस अवसर पर सांसद श्री भागीरथ प्रसाद, विधायक श्री नरेन्द्र कुशवाह, जनपद व नगर अध्यक्षों के साथ वरिष्ठ पार्षद सहित अनेक गणमान्य नागरिक मौजूद रहे। राजेन्द्र जैन बिल्लू, जगदीश जैन, राजेश जैन बॉबी, अरविन्द जैन, सौरभ जैन पुच्चू, धर्मेन्द्र जैन, मनोज जैन, राजेश जैन, विवेक जैन मोदी, निकेत जैन निक्की, सचिन जैन टिंकल, संजय जैन दीपू, नरेश जैन भीम, कमलेश जैन तांतरी, आकाश जैन मोदी, अंकुश जैन आदि लोग उपस्थित थे।

क्षमाशील बने।

निर्मलता का सुखद आभास कराता है क्षमावाणी पर्व। क्षमावाणी का पर्व विश्व मैत्री दिवस के रूप में हम सभी मनाते हैं पर्यूषण पर्व के बाद ही क्षमावाणी का पर्व भारत के साथ-साथ विश्व के अन्य देशों में भी जहां-जहां जैन समाज है वहां भी उतने ही उत्साह एवं श्रद्धा से मनाया जाता है जितना कि भारत में जैन समुदाय के लोग मनाते हैं। सभ्य समाज में क्षमा याचना और क्षमा दान का विशेष महत्व हैं। यह क्षमा-याचना और क्षमादान चाहे दो अथवा समूह के या कि राष्ट्रों के बीच यदि ईमानदारी के साथ क्षमा याचना की जाती है तो अपमान की भावना का निराकरण तो करती ही है साथ ही क्षमाशील भी बनाती है। क्षमा याचना में रोग निवारण की शक्ति निहित है। लोग क्षमा याचना को दुर्बलता का पर्याय समझ लेते हैं जबकि क्षमा याचना के लिए चारित्रिक दृढ़ता भी आवश्यक होती है। इस तरह किसी व्यक्ति के द्वारा किए गए अप्रिय आचरण अथवा अपराध का उसी रूप में उत्तर ना देना क्षमा कहलाता है। किसी ने हमसे अनुचित व्यवहार किया और उस व्यक्ति के भूल स्वीकार करने पर हमने उससे किसी प्रकार का अनुचित व्यवहार ना करने का आश्वासन दिया। यह आश्वासन ही क्षमा कहलाता है। क्षमा उदारता, महानता और विनम्रता का पर्याय है। क्षमाशीलता से व्यक्ति छोटा नहीं होता, न ही उसके मान-सम्मान में कोई कमी आती है बल्कि वह दिनों दिन बढ़ता है। क्षमा से क्रोध की समाप्ति होती है, तनाव कम होता है और इससे मन में शांति तथा आनंद की सुखद अनुभूति होती है। क्षमा वाणी पर्व का अपना एक अलग ही महत्व है यह हमें संयम तथा सहनशीलता का पाठ पढ़ाता है एवं जीवन जीने का कला सिखाता है स्वयं से ज्ञात एवं अज्ञात कारणों से हुई भूलों से स्वयं को क्षमा करना एवं प्राणीमात्र के साथ ही इसी भाव को प्रगट करना ही इस महान पर्व की सार्थकता है।

- राजेश जैन, झाँसी

आगामी पवाजी के मेले में "प्रयास" रिश्तों को जोड़ने का... द्वितीय अंक का सशुल्क वितरण किया जावेगा। अधिक जानकारी के लिए संपर्क करे - कोमलचंद जैन 9329524227, बाहुबली जैन 9425903301, राजेन्द्र जैन 9424013136

* मुनिश्री क्षमासागर जी की रचित कविता *

अपनी अंतिम यात्रा का क्या खूब वर्णन किया है....
था मैं नींद में और मुझे इतना सजाया जा रहा था....
बड़े प्यार से मुझे नहलाया जा रहा था....
ना जाने था वो कौन सा अजब खेल मेरे घर में....
बच्चों की तरह मुझे कंधे पर उठाया जा रहा था....
था पास मेरा हर अपना उस वक्त....
फिर भी मैं हर किसी के मन से भुलाया जा रहा था....
जो कभी देखते भी न थे मोहब्बत की निगाहों से....
उनके दिल से भी प्यार मुझ पर लुटाया जा रहा था....
मालूम नहीं क्यों हैरान था हर कोई मुझे सोते हुए देख कर....
जोर-जोर से रोकर मुझे जगाया जा रहा था....
काँप उठी मेरी रूह वो मंजर देख कर....
जहाँ मुझे हमेशा के लिए सुलाया जा रहा था....
मोहब्बत की इन्तहा थी जिन दिलों में मेरे लिए....
उन्हीं दिलों के हाथों
आज मैं जलाया जा रहा था!!!